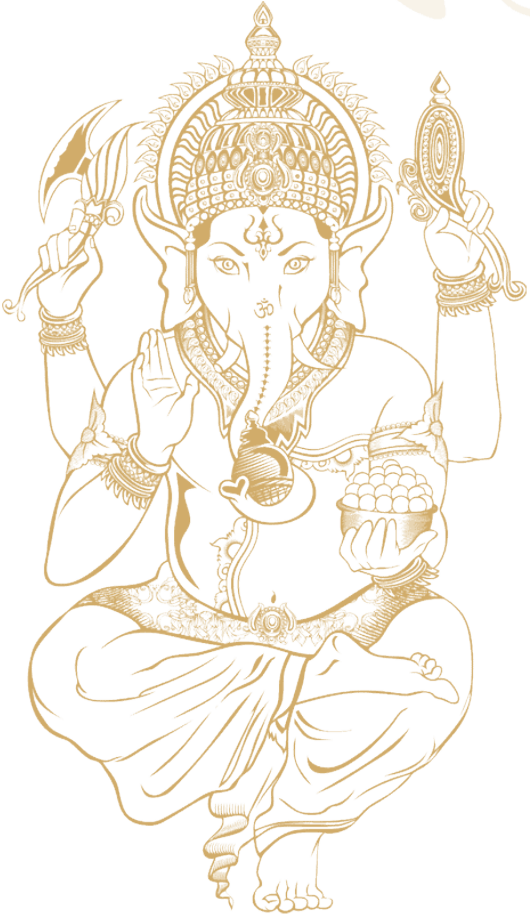

Mr.a

07 Apr 1998

11:55 PM

Una

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120172901

तिथि 07/04/1998 **समय** 23:55:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Una **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:49:51
अक्षांश 31:28:00 उत्तर **रेखांश** 76:19:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:44 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	12:33:34 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:02:14 घं	योनि	मूषक
सूर्योदय	06:06:49 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:47:39 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2055	वश्य	वनचर
शक संवत	1920	वर्ग	मूषक
मास	चैत्र	युँजा	मध्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	अग्नि
तिथि	12	जन्म नामाक्षर	मू-मुकेश
नक्षत्र	मघा	पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
योग	गण्ड	होरा	बुध
करण	बव	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
केतु 2वर्ष 5मा 13दि		भद्रिका 1वर्ष 9मा 0दि	
सूर्य		धान्या	
19/09/2020		07/01/2024	
20/09/2026		07/01/2027	
सूर्य	07/01/2021	धान्या	08/04/2024
चन्द्र	09/07/2021	भ्रामरी	07/08/2024
मंगल	13/11/2021	भद्रिका	07/01/2025
राहु	08/10/2022	उल्का	08/07/2025
गुरु	27/07/2023	सिद्धा	06/02/2026
शनि	08/07/2024	संकटा	08/10/2026
बुध	15/05/2025	मंगला	07/11/2026
केतु	20/09/2025	पिंगला	07/01/2027
शुक्र	20/09/2026		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			29:50:57	वृश्चिक	ज्येष्ठा	4	बुध	शनि	---	0:00			
सूर्य			23:54:08	मीन	रेवती	3	बुध	मंगल	मित्र राशि	1.34	अमात्य	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			08:39:41	सिंह	मघा	3	केतु	गुरु	मित्र राशि	1.01	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	02:12:55	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	मूलत्रिकोण	1.90	कलत्र	भ्रातृ	जन्म
बुध	व	अ	21:59:27	मीन	रेवती	2	बुध	सूर्य	नीच राशि	0.92	भ्रातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			20:52:12	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.04	मातृ	धन	वध
शुक्र			07:45:59	कुंभ	शतभिषा	1	राहु	राहु	मित्र राशि	1.45	ज्ञाति	कलत्र	साधक
शनि		अ	28:47:29	मीन	रेवती	4	बुध	शनि	सम राशि	1.13	आत्मा	आयु	अतिमित्र
राहु			16:18:51	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु			16:18:51	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

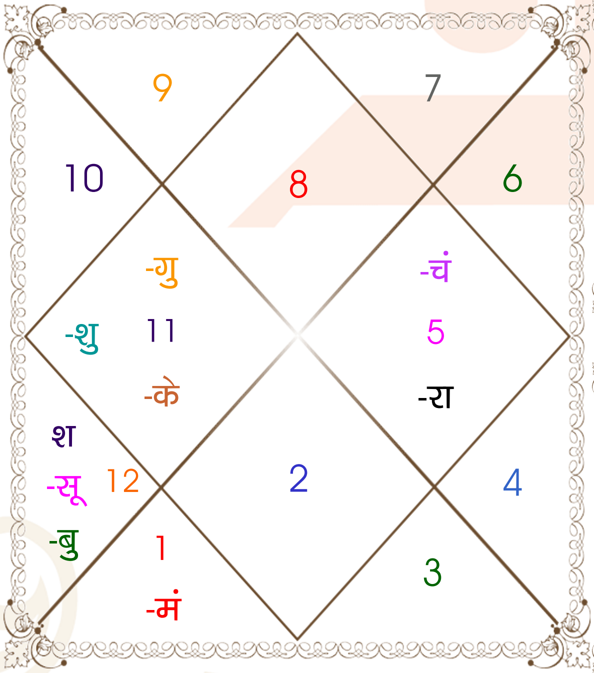

चन्द्र कुंडली

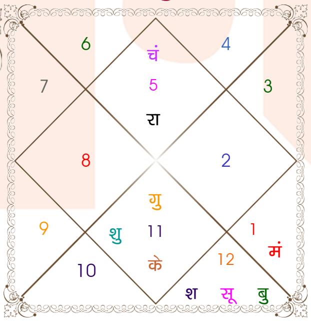

नवमांश कुंडली

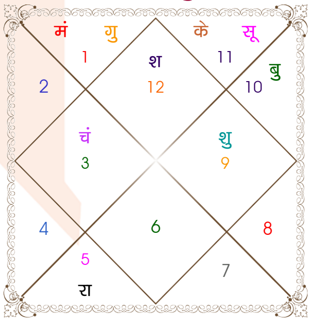

सर्वाष्टकवर्ग

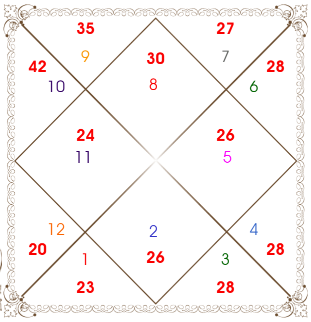

दशमांश कुंडली

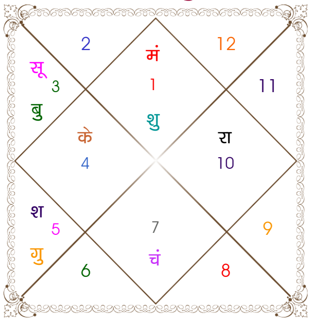

नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी अन्त्य, योनि मूषक, गण राक्षस तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "मु" से प्रारम्भ होगा यथा- मुकेश।

आपका जन्म गण्डमूल नक्षत्र में हुआ हैं। यद्यपि तृतीय चरणोत्पन्न जातकों को विशेष अरिष्ट नहीं होता फिर भी सावधानी वश नक्षत्र की शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करवा लेनी चाहिए। इसके लिए जन्म समय में नक्षत्र के 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद पुनः इस नक्षत्र के आने पर जपे हुए मंत्रो के दशांश का हवन करवा कर शान्ति करनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न होना चाहिए।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में धनैश्वर्य से सदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा सेवकों के स्वामी भी बनेंगे। आप समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों के उपभोग करने वाले पुरूष होंगे। देवताओं तथा माता पिता के प्रति आपके मन में सेवा भाव विद्यमान रहेगा तथा आप उद्योगी पुरूष भी होंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

आप अपने जीवन में अधिकांशतया साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने में विशेष रूप से प्रयत्नशील रहेंगे। इसी वृति के कारण आप सेना या पुलिस में किसी उच्च पद की भी प्राप्ति करने में सफल हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त आप सरकारी सेवा भी निश्चित रूप से करेंगे। आप माता पिता तथा पितामह आदि बुजुर्गो की सेवा में भी सदैव तत्पर रहेंगे।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त,

महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

आप समय समय पर रूप बदलने में प्रवीण होंगे। उत्सवों के प्रति आपका हार्दिक तथा मानसिक रूझान रहेगा तथा इनके आयोजन करने में आप तन मन धन से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जनता के प्रशासक के रूप में भी जाने जा सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपका मन कठोरता से युक्त रहेगा तथा स्वभाव भी आपका उग्र तथा तेज से पूर्ण रहेगा। आप विद्या तथा ज्ञान प्राप्त करने में भाग्यशाली रहेंगे। पापकर्मों की आप उपेक्षा करेंगे तथा हमेशा सत्कर्मों की तरफ आकर्षित रहेंगे। आप बुद्धिमान होंगे तथा शत्रुओं को पराजित करने में हमेशा सफल रहेंगे। कभी कभी आप के मन में अभिमानी प्रवृति भी उत्पन्न होगी। आप हमेशा पुण्य तथा सत्कर्मो की तरफ प्रवृत रहेंगे। स्त्री से आप पूर्ण रूप से पराजित रहेंगे तथा उसके कहे अनुसार ही आचरण करेंगे। समाज से आप पूर्ण मान सम्मान प्राप्त कर के प्रख्यात रहेंगे।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

सिंह राशि में जन्म लेने के कारण आप उग्र प्रकृति के पुरूष होंगे साथ ही तेजस्विता के भाव से युक्त रहेंगे। आपकी मुखाकृति तथा मस्तक विशालाकृति के होंगे तथा आँखें भी आपकी छोटी एवं पीतवर्ण से युक्त रहेगी। आप वनों तथा पर्वतों में घूमने के प्रिय एवं शौकीन रहेंगे। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही क्रोधित तथा उत्तेजित भी हो जाएंगे। आप अपने जीवन में मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुल रहेंगे। दान देने की प्रवृति से आप युक्त रहेंगे तथा यदा कदा इस प्रवृति का प्रदर्शन भी करते रहेंगे। कभी कभी आपके मन में अभिमानी प्रवृति भी उत्पन्न होगी। आप माता पिता के प्रिय तथा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करने वाले होंगे। स्त्री पक्ष से आप विशेष आकर्षित नही रहेंगे तथा संतति में भी पुत्र संतति की अल्पता रहेगी। आप की बुद्धि स्थिर होगी अतः आप समस्त कार्यों को धैर्य से सम्पन्न करेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगनग कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की हडिड्यां अत्यन्त ही मजबूत होंगी तथा तेज स्वभाव से आप युक्त रहेंगे। आपकी प्रकृति में एक विचित्रता यह भी होगी कि किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व आप मुंह से कोई न कोई ध्वनि अवश्य निकालेंगे। आपका सीना विस्तृत एवं आकर्षक होगा। इसके साथ ही समाज के लोगों में पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप हमेशा सावधान तथा कार्यारम्भ से पूर्व सम्पूर्ण परिस्थितियों का गहनता से निरीक्षण करने वाले होंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताितीक्ष्णोऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी दृढ तथा मोटी होगी तथा मुखाकृति भी विशाल दृष्टिगोचर होगी। आप माता के प्रिय वत्सल रहेंगे तथा उनकी पूर्ण सेवा सुश्रूषा में तत्पर रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप पेट भरने योग्य धनार्जन से सन्तुष्ट रहेंगे। आपके स्वभाव में क्रोध की बहुलता रहेगी। पहाड़ों तथा जंगल में जाने के लिए आप विशेष इच्छुक रहेंगे। आप सेवक तथा बन्धु से भी युक्त रहेंगे। साथ ही आपका सीना विस्तृत तथा सुन्दर होगा।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।

गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

क्षमाशीलता का गुण नैसर्गिक रूप से आपके मन में विद्यमान रहेगा। आप हर समय कुछ न कुछ कार्य करने में सदा तत्पर रहेंगे। प्रमाद करना आपको अच्छा नहीं लगेगा। साथ ही आप हमेशा देश विदेशों के भ्रमण तथा यात्राओं में व्यस्त रहेंगे। ठण्ड से आप बहुत डरने वाले होंगे। आप अच्छे गुणों से युक्त मित्रों के मित्र होंगे। समाज में आपका व्यवहार विनम्रता से युक्त रहेगा। अतः आप सबसे सम्मान तथा आदर प्राप्त करने में सफल रहेंगे। माता पिता के प्रति आपके मन में विशेष लगाव तथा सेवा का भाव रहेगा। साथ ही आपमें कई बुरी आदते भी होंगी परन्तु इनसे आपके यश तथा ख्याति में कोई अन्तर नहीं पड़ेगा।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखों तथा शरीर की रचना सुन्दर एवं आकर्षक होगी। आप सर्वत्र गम्भीर दृष्टि से निरीक्षण करने के पश्चात् ही कार्यारम्भ करने वाले होंगे तथा सम्पूर्ण जीवन को सुखपूर्वक व्यतीत करेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलेंगे। साथ ही आपके हृदय में दया के भाव की भी न्यूनता रहेगी। आप अपने समस्त कार्यों को नियमित तथा साहसपूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। आप अकारण ही छोटी छोटी बातों पर गुस्सा करने वाले व्यक्ति होंगे। साथ ही आप अन्य जनों से व्यर्थ में ही विवाद करेंगे जिससे अधिकांश लोगों का आपसे वैमनस्य का भाव रहेगा। अतः सभी सामाजिक जनों से आपको मिलकर रहना चाहिए।

आप प्रमेह तथा उन्माद आदि रोगों से भी ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी मुखाकृति सामान्य होगी परन्तु आप कभी कभी अपने मुख से कठोर वाणी बोलेंगे जिससे सुनने वाला कष्टानुभूति करेगा। इसलिए आपको अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का उपयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में जन्म होने के कारण आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीव्र होगी। सर्वप्रकार के धन एवं ऐश्वर्य से आप परिपूर्ण तथा सुसम्पन्न रहेंगे। आपके जीवन में कभी भी धनाभाव नहीं रहेगा। आप अपने कार्य को करने में हमेशा व्यस्त रहेंगे। खाली बैठना या कार्य करने में आलस करना आपको अच्छा नहीं लगता। आप सर्वदा सक्रिय रहेंगे। अभिमान की भावना का आप में अभाव रहेगा। फलतः सामाजिक जनों से मान तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। परन्तु किसी अन्य व्यक्ति पर आप विश्वास कम ही करेंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोऽप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रूचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास

अभाव नही रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृति योग, बवकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृति योग तथा ववकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के विषय में भी सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव सूर्य भगवान को प्रातः काल अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना करनी चाहिए एवं रविवार का उपवास भी रखना चाहिए। साथ ही सोना, गुड़, माणिक्य, रक्तवस्त्र, गेहूं इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में कमी होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।